कृषि मंत्री (सरदार एच०एस० चड्ढा) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस डिबेट में पार्टीसिपेट तो नहीं करूंगा क्योंकि मैं उस कमेटी का चेयरमैन हूं जिस कमेटी ने रिपोर्ट देनी है। मेरे पास कल बहुत से विधायक साथी आये थे और मुझ से पूछ रहे थे कि हमारे यहां कितने गुरूद्वारा हैं, उनकी कितनी-कितनी जमीनें हैं और दूसरी प्रोपर्टीज क्या-क्या हैं। मैं कमेटी का चेयरमैन होने के नाते इस महान सदन में सभी को बताना चाहूंगा कि हरियाणा में टोटल हिस्टोरिकल गुरूद्वारे 100 हैं। इनमें से 52 गुरूद्वारों की मैनेजमैंट का काम एस०जी०पी०सी० के तहत चल रहा है। और 48 गुरूद्वारों को एस०जी०पीसी० ने ऐसे ही छोड़ दिया। गुरूद्वारों के टोटल असैट्स 500 करोड़ रुपये के लगभग हैं। लैंडिड प्रोपर्टी 3536 एकड़ के करीब है और सालाना इन्कम 100 करोड़ रुपये के लगभग है लेकिन उनका रिकार्ड 18 करोड़ रुपये बोलता है। इनमें 8 गुरूद्वारे ऐसे हैं जिनकी सालाना आमदनी 20 लाख रुपये से ऊपर है, 27 गुरूद्वारे ऐसे हैं जिनकी सालाना आमदनी एक लाख रुपये से ऊपर है और 17 गुरूद्वारे ऐसे हैं जिनकी आम्दनी अच्छी है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को यही जानकारी देना चाहता था, बाकी सदन का काम है । मैं और कुछ नहीं कहना चाहता ।

श्री निर्मल सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि सिक्ख होना बहुत बड़ी बात है और सिक्ख होना मुश्किल भी है। सिक्ख वह है जो लड़े दीन के हेत। जिसने कुर्बानी दी हो। अब हर आदमी सिक्ख बन जाता है लेकिन पहले परिवार का जो बड़ा बेटा दान दिया जाता था वही सिक्ख बनता था वह चाहे किसी भी परिवार से, जाति से या धर्म से हो वही सिक्ख बनता था और वह हर कोम के लिए हुआ करता था। अध्यक्ष महोदय, जिस समय हिन्दुस्तान जात-पात और धर्म से ग्रस्त था उस समय गुरू गोविन्द सिंह जी ने खंडे-बाट्टे से सिखाया था कि जात-पात और धर्म से ऊपर उठो। उन्होंने बहुत से गुरूओं, ऋषी-मुनियों की वाणियों को लेकर एक ग्रंथ रचा था और पूरी दुनियां को सेक्यूलेरिज्म का पाठ पढ़ाया था। अध्यक्ष महोदय, मैं 1983 में चाईना गया था। चाईना धर्म को न मानने वाला देश है। वहां का कानून भी धर्म को मानने से मना करता है। वहां पर मैंने सभी मंदिरों पर चाहे वे बौद्ध मंदिर के थे ताले लगे हुए थे। एक दिन हम एक यूनिवर्सिटी में गये। वहां के स्टूडैंट्स ने हम से गुरू गोविन्द सिंह जी और सिक्ख धर्म पर चर्चा की। उन्होंने गुरू गोबिन्द सिंह जी के बारे में बहुत ऊंचे विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि गुरू गोबिन्द सिंह जी महानायक थे as a solider, as a poet. अध्यक्ष महोदय, यदि हम गुरू गोविन्द सिंह जी की कुर्बानियों को देखें तो आज सिक्ख धर्म की परिभाषा जो है वह बड़ी लम्बी चौड़ी परिभाषा है। कोई भी आदमी अपने कर्मो से सिक्ख बन सकता है। आपने और रणदीप जी ने मुझे सिक्ख कह कर पुकारा उसके लिए मैं आपका धन्यवादी हूं।

श्री एस०एस० सुरजेवाला : स्पीकर सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि मैम्बर्ज को मंत्री से पहले बोलने देना चाहिए।

परिवहन मन्त्री (श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला) : अध्यक्ष महोदय, सरदार निर्मल सिंह जी ने जो बातें कही मुझे लगता है कि आपने बहुत सोच समझकर वाजिब फरमाया क्योंकि अपनी कार्यशैली से वे अपने जीवन के रास्ते से कई मायनों में इस परिभाषा के अन्दर बिल्कुल पूरे खरे उतरते हैं। श्री निर्मल सिंह गैर सरकारी संकल्प का प्रस्ताव आज लेकर आये हैं। दुर्भाग्य एक बार फिर यह है कि जहां सारा सदन, सभी पार्टियों के सदस्य आज यहां पर हैं और उनके चेहरे, भावनाएं उनकी उत्सुकता इस प्रस्ताव पर अपने-अपने विचार व्यक्त करने के लिए देखने लायक है।

स्पीकर साहब, हमारे इंडियन नैशनल लोकदल के सदस्य आज हाऊस में नहीं हैं जबकि उनके भी प्रस्ताव आज लगे हैं परन्तु वे अपना सामान उठाकर चले गये हैं। वे यह जानते थे भी कि आज वखरी एस०जी०पी०सी० बनाने का प्रस्ताव आयेगा जो कि हरियाणा के सिक्खों, हरियाणा के पंजाबी भाईयों तथा आम आदमी के लिए एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव है। चौटाला साहब ने तो आज सदन में आना ही उचित नहीं समझा क्योंकि अगर वे यहां आते तो उन्हें इस वखरी एस०जी०पी०सी० के प्रस्ताव के ऊपर सकारात्मक और पक्षधर विचार देने पड़ते इसलिए वे सदन में नहीं आये। वे अपनी पार्टी को यह बोल गये कि तुम भी वखरी एस०जी०पी०सी० का प्रस्ताव आने से पहले सदन से वाक आऊट कर जाना क्योंकि ऐसा न करने से कहीं प्रकाश सिंह बादल नाराज न हो जाये। स्पीकर सर, इनैलो के सदस्यों का यह बहुत कंडमनेबल व्यवहार है। यह एक बड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा था। चौटाला साहब और उनकी पार्टी के सदस्यों को आज यहां आना चाहिए था उन्हें अपने सुझाव और विचार व्यक्त करने चाहिएं थे। जब कोई बात कहने की जरूरत नहीं होती तब सदन में आकर छलांगे मारते हैं। जब कोई प्रान्त के लोगों के हितों से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा सदन में आता है तो फिर पीठ दिखाकर भाग जाते हैं। एक तरफ जहां सरदार निर्मल सिंह जी आज सत्ता पक्ष में बैठे हैं वहीं दूसरी तरफ इनैलो के सदस्य इतनी दूर बैठे हैं क्योंकि प्रदेश की जनता ने उन्हें दूर भेज दिया है। एक तरफ तो सत्ता पक्ष खुले मन से इस विषय पर चर्चा करवाने को तैयार है। दूसरी तरफ इनैलो के नेता हैं जो इस प्रस्ताव पर अपनी बात तक कहना नहीं चाहते। अध्यक्ष महोदय, मैं भी इस सदन का सदस्य होने के नाते इस विषय पर आपकी अनुमति से चन्द बातें जरूर रखना चाहूंगा। हम धन्यवाद देते हैं सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा जी को जिन्होंने बहुत सारे ऐसे आंकड़े इकट्ठे किए जो हरियाणा की जनता के नोटिस में आज तक आये ही नहीं थे जिनकी वजह से प्रकाश सिंह बादल की पार्टी हमारे सिक्ख भाइयों को, हमारे पंजाबी भाईयों को गुमराह करती थी। आज उन्होंने सदन के सामने दूध का दूध और पानी का पानी उन आकड़ों के माध्यम से रख दिया। अध्यक्ष महोदय, हम सब जानते हैं कि 308 साल पहले 13 अप्रैल 1699 को खालसा पन्थ की स्थापना हुई थी और हरियाणा में जैसा माननीय चट्ठा साहब ने बताया कि 100 के करीब हमारे गुरूद्वारे हैं। इनमें से 52 जो हैं वो इन्होंने अपने प्रबन्धन के अन्दर ले रखे हैं। यहां पर 7 या 8 तो गुरूद्वारे ऐसे हैं जिनका बड़ा विशेष ऐतिहासिक महत्व है और आज की चर्चा से कहीं न कहीं उनका जुड़ाव भी है, उनकी मैं यहां चर्चा करना चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, नाडा साहेब गुरूद्वारा जहां आप भी हमेशा मत्था टेकने जाते हैं, आपकी भी विशेष आस्था नाडा साहेब के गुरूद्वारे में है। स्पीकर सर, 10 वें गुरू, गुरु गोविन्द सिंह जी यहां आये थे। 50 लाख रूपये से अधिक महीने का गुल्लक और दूसरी आय है जो कि सिर्फ नाडा साहिब गुरूद्वारे की है। स्पीकर सर, अम्बाला शहर में मन्जी साहब गुरूद्वारा है जहां पर सिक्खों के छठे गुरू हरगोबिन्द साहिब महाराज आये थे। इस गुरूद्वारा में 35 लाख रूपये से अधिक सालाना की अनुमानित आय होती है। स्पीकर साहब, अम्बाला शहर के पास पंजोखरा साहब जो गुरूद्वारा है यहां पर आठवें गुरू गुरू हरकिशन साहब आए थे और वहां पर किसी ने हठ किया कि जो विद्या है, जो ज्ञान है वह चन्द लोगों की दासी है तो गुरू साहब ने वहां पर गूंगे से गीता का पाठ करवा के दिखाया था। स्पीकर सर, यह हमारे लीजैंड का भी हिस्सा है। पंजोखरा साहब गुरूद्वारे की आय भी सालाना 30 लाख रूपये से अधिक है। स्पीकर सर, इसी प्रकार से यमुना नगर में कपाल मोचन में जो गुरूद्वारा है वहां पर पहले गुरू गुरू नानक साहब तथा दसवें गुरू गुरू गोबिन्द सिंह जी यहां पर आये थे। स्पीकर साहब, 30 लाख रूपये सालाना की आय इस गुरूद्वारे की भी है। स्पीकर सर, पांचवा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक गुरूद्वारा जो हमारे यहां पर

[श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला]

है वह है गुरूद्वारा छेंवी पातशाही कुरूक्षेत्र जिससे चड्ढा साहब का विशेष जुड़ाव रहा है और लगाव भी रहा है और इनकी वहां प्रति विशेष आस्था भी है। स्पीकर सर, छेवें गुरू गुरू हरगोबिन्द कुरूक्षेत्र में भी आए। कई और ऐतिहासिक गुरूद्वारे हैं और हमें इस बात का फख्र है कि सात गुरुसाहेबान यहां पर आए और उन्होंने हरियाणा की इस भूमि को कृतार्थ किया। कुरूक्षेत्र, जहां गीता की भूमि है वहीं यह भूमि गुरूओं की भी भूमि है। स्पीकर साहब, एक और महत्वपूर्ण गुरूद्वारा मेरे विधान सभा क्षेत्र में धमतान साहब गुरूद्वारा है। आठ सौ एकड़ से अधिक तो जमीन इस गुरूद्वारा साहब के पास है और नौंवे गुरू गुरू तेगबहादुर जी जब अपनी कुर्बानी देने के लिए दिल्ली गये थे तो वे हमारी इस धरती को कृतार्थ करके गये थे। धमतान साहब के अन्दर वे पड़ाव करके गए थे। स्पीकर सर, सातवां ऐतिहासिक गुरूद्वारा भी मेरे जिले में है और उसको नौंवी पातशाही गुरूद्वारा जीन्द साहब कहते हैं। इस गुरूद्वारे के पास भी साढ़े आठ सौ एकड़ जमीन है। गुरू तेगबहादुर जी जब अपनी कुर्बानी देने के लिए दिल्ली गये थे तब वे यहां पर रूके थे। इस गुरूद्वारे की भी बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी है। ऑफिशियल जानकारी चड्ढा साहब ने दे दी है। हमारे इन सारे गुरूद्वारों के पास कुल जमीन 3536 एकड़ है। स्पीकर साहब, यहां पर मैं यह बताना चाहूंगा कि अनौपचारिक जानकारी के मुताबिक यह मेरी जानकारी में है। चड्ढा साहब की कमेटी इस बात की जांच भी करेगी कि कुल जमीन साढ़े पांच हजार एकड़ से अधिक है और एस०जी०पी०सी० की लापरवाही के चलते हुए कई लोगों ने हमारे गुरूद्वारा साहब की जमीनों में आज कब्जे तक कर लिये हैं। स्पीकर सर, अगर 3600-3700 एकड़ की फिगर भी मान ली जाए तो 5,62,500 रुपये किल्ला के हिसाब से 100 करोड़ रुपये से अधिक आय बनती है। आपने फरमाया कि यह अनुमानित आय है जब कि पंजाब की एस०जी०पी०सी० जो यहां के गुरूद्वारों को नियन्त्रण कर रहे हैं वे अपने बजट में केवल 18 करोड़ रुपये की आय हमारे गुरूद्वारों से दर्शाते हैं। अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से हमारे सिक्ख भाईयों के साथ तथा पंजाबी भाइयों के साथ इस प्रकार से भेदभाव का व्यवहार किया जा रहा है, यह उसका सूचक भी है। स्पीकर सर, इसके अलावा मैं यह भी बताना चाहूंगा कि इन सारे गुरूद्वारों के अतिरिक्त करीब 500 से ज्यादा डेरे और गुरूद्वारे ऐसे हैं जो कि एस०जी०पी०सी० के नियन्त्रण में नहीं आ पाये हैं या नहीं लिये गये हैं। उसका कारण केवल एक है कि जो आज की सिक्ख गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी है वह पूरी तरह से सरदार प्रकाश सिंह बादल की जकड़ में है। उन्होंने कभी हरियाणा में सिक्ख धर्म के, सिक्ख मर्यादा के हमारे प्रचार-प्रसार के अन्दर, शिक्षण संस्थाओं को खोलने के बारे में तथा सामाजिक उत्थान में कोई रूचि नहीं ली, नहीं तो वे सारे गुरूद्वारे भी जो आज एक-एक जगह पर चलते हैं उनको भी एस०जी०पी०सी० के अन्दर लिया जा सकता था। स्पीकर सर, मैं यहां पर एक विशेष बात की चर्चा करना चाहूंगा कि हरियाणा प्रदेश को बने हुए 41 वर्ष के करीब हो चुके हैं। एस०जी०पी०सी० की संस्था में कहीं पर भी हरियाणा का कोई भी सिक्ख भाई नुमांयदा नहीं है। अध्यक्ष महोदय, हमारे हरियाणा के सिक्ख भाई, हरियाणा के पंजाबी भाई को उस संस्था में नुमांयदगी देने के लिए कोई राजी नहीं है। मैं इस बारे में सदन में कुछ आंकड़े रखना चाहता हूं। जहां तक शिक्षण संस्थाओं का सम्बन्ध है एस०जी०पी०सी० ने पंजाब के अन्दर कई खालसा हायर सकैन्डरी स्कूल खोले हैं, जहां पर बहुत उच्च शिक्षा दी जाती है। गुरूद्वारों में जो चढ़ावा या दान वगैरह आता है वह पैसा उन स्कूलों में लगाया जाता है। अध्यक्ष महोदय, 34 से ज्यादा खालसा हायर सकैन्डरी स्कूल पंजाब में खोले गए हैं। हमारे यहां पर 41 साल बीत जाने के बाद भी आज तक हरियाणा में कोई भी स्कूल

एस०जी०पी०सी० द्वारा नहीं खोला गया है। जबकि यहां गुरूद्वारों में चढ़ने वाला चढ़ावा सारा एस०जी०पी०सी० के पास जाता है। अध्यक्ष महोदय, 2 साल पहले जब एस०जी०पी०सी० के इलैक्शन हुए थे उस समय 7 सदस्य हरियाणा से चुन कर गए थे। मैं उनको बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने प्रकाश सिंह बादल के खिलाफ वोट दिए थे और हरियाणा से 70 प्रतिशत वोट बादल साहब के खिलाफ डाले गए थे। पंजाब में एस०जी०पी०सी० ने मैडिकल, डैंटल, नर्सिंग कालेज खोले हैं लेकिन इनमें से एक भी कॉलेज हमारे हरियाणा में एस०जी०पी०सी० द्वारा 41 सालों में नहीं खोला गया है। अभी मेरे से पहले बोलते हुए भाई निर्मल सिंह जी ने चर्चा की थी कि जब हरियाणा में इस तरह से कालेज खोलने की मांग उठाई गई थी और एस०जी०पी०सी० पर दबाव दिया गया था तो अध्यक्ष महोदय, एस०जी०पी०सी० ने जबरन हमारे यहां पर गुरुद्वारे के जमीन को टेकओवर कर लिया था। वहां पर मीरीपीरी डैंटल कालेज खोलने का निर्णय लिया गया था। उसमें भी एस०जी०पी०सी० ने हेराफेरी की थी। वहां पर 24 एकड़ जमीन जो कि जी०टी० रोड़ से लगती थी और उसकी लागत 50 करोड़ रुपए के करीब थी उस पर ट्रस्ट बना दिया। उस ट्रस्ट के 8 सदस्य हैं और उसके चेयरमैन सरदार प्रकाश सिंह बादल हैं और उन आठ सदस्यों में से 7 सदस्य प्रकाश सिंह बादल के हैं और एक सदस्य की जगह खाली रख दी है और उसको भी एस०जी०पी०सी० ही नोमिनेट कर सकती है। यह जो जमीन थी वह गुरुद्वारा मस्तगढ़ की लोकल कमेटी की थी और उसकी गिरदावरी भी उन्होंने गलत ढंग से करवा ली थी। इसके लिए उन्होंने लोकल कमेटी को सुपरसीड कर दिया था और वहां पर एक रिसीवर लगा दिया। अध्यक्ष महोदय, आपको भी पता है कि रिसीवर को कभी भी अधिकार नहीं है कि गिरदावरी करवाए। उसने क्या किया, उसने बादल सरकार के नाम पर जो ट्रस्ट है उसके नाम पर वह गिरदावरी करवा दी। इसके साथ ही बी०पी०एस० मान बादल साहब के रिश्तेदार हैं उनको उसका डायरेक्टर लगा दिया और उसको 80 हजार रूपए प्रतिमास के हिसाब से तनख्वाह दी जा रही है। अध्यक्ष महोदय, इस तरह से करके वे हमारे सिक्ख भाईयों के साथ नाइन्साफी कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, 41 सालों में एस०जी०पी०सी० द्वारा जहां पंजाब में 2 इंजीनियरिंग कालेज खोले गए हैं, उनके मुकाबले में हरियाणा में एक भी इंजीनियरिंग कालेज नहीं खोला गया है। इसके अलावा पंजाब में 18 डिग्री कालेज भी खोले गए हैं और हमने जब पूछा कि हरियाणा में 41 सालों में कितने डिग्री कालेज खोले गए तो फिर जवाब शून्य में आया है। स्पीकर सर, एक भी खालसा हायर सैकेंडरी स्कूल नहीं खोला, एक भी मेडीकल कालेज नहीं खोला, एक भी इंजीनियरिंग कालेज नहीं खोला, एक भी डेंटल कालेज नहीं खोला, एक भी नर्सिंग स्कूल नहीं खोला, एक भी डिग्री कालेज नहीं खोला। स्पीकर सर, स्कूल और कालेज पर हमारा कोई हिस्सा नहीं जबकि हमने 100 करोड़ रुपये दिये वह सारा पैसा बादल साहब और उनकी पार्टी ने धर्म के प्रचार-प्रसार के बजाए अपनी पार्टी के प्रचार प्रसार के लिए इस्तेमाल किया। स्पीकर सर, हमारे सिक्ख और पंजाबी भाइयों के दुखड़े की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। मैं आपकी इजाजत से सदन को एक बात और बताना चाहूंगा कि धार्मिक प्रचार भी एस०जी०पी०सी० का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जैसा कि निर्मल सिंह जी ने बोलते हुए कहा कि सिक्ख एक धर्म नहीं बल्कि सिक्ख एक मर्यादा भी है। धार्मिक प्रचार क्या है, धार्मिक प्रचार यह है कि अगर कोई बच्चा ग्रंथी की पढ़ाई करना चाहे, कोई बच्चा रागी की पढ़ाई करना चाहे, कोई बच्चा ढाडी की पढ़ाई करना चाहे, कोई बच्चा कविशर की ट्रेनिंग करना चाहे या कोई बच्चा गुरमत संगी सीखना चाहे तो वह यह सीख सकता है। स्पीकर सर, हरियाणा के गठन के 41 साल बीत जाने के बाद भी इस प्रकार की ट्रेनिंग लेने के लिए हरियाणा के नौजवान बच्चों, सिक्ख भाइयों को,

[श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला]

पंजाबियों को और सिक्ख दोस्तों को पंजाब में जाना पड़ता है क्योंकि हरियाणा में कोई ऐसी संस्था खोलने की एस०जी०पी०सी० ने जहमत नहीं की। यह जहमत इसलिए नहीं की क्योंकि वह तो पूरी तरह से बादल साहब के नियंत्रण में है और उनका हमारे सिक्ख भाइयों से कोई लेना देना नहीं है। ये सामने वाले जो हमारे भाई अभी भगोड़े हो गये हैं इनका और उनका जो गठजोड़ है उसके माध्यम से ये केवल सिक्ख भाईयों का राजनैतिक इस्तेमाल करना चाहते हैं। सामाजिक उत्थान की बहुत सारी संस्थाएं भी एस०जी०पी०सी० ने खोली हैं। वृद्ध आश्रम, बच्चों के ट्रैनिंग सैंटर और सिलाई सैंटर 400-500 की संख्या में खोले गये हैं। जब हमने इस बारे में जानने की कोशिश की कि 41 सालों में हरियाणा में ये कितने खोले गये तो जवाब फिर शून्य आया है। एक भी सामाजिक उत्थान की संस्था, एक भी शिक्षण संस्था एक भी धार्मिक प्रचार की संस्था हमारे प्रान्त के अन्दर नहीं खोली गयी है। हमारे गुरूद्वारे जिनका चट्ठा साहब ने भी जिक्र किया कि उनके अंदर कर्मचारी कहां के लगाए गए हैं वह भी देखने की बात है। सभी गुरूद्वारों में 1500 के करीब कर्मचारी एस०जी०पी०सी० द्वारा लगाए गए हैं। इस बारे में हमने या दूसरे माननीय सदस्यों ने जब आंकड़े इकट्ठे करने का प्रयास किया तो पाया कि 90 प्रतिशत कर्मचारी हरियाणा के सिक्ख नहीं, हरियाणा के पंजाबी नहीं बल्कि पंजाब के बादल साहब के हल्के या दूसरे इलाकों से एस०जी०पी०सी० द्वारा पंजाब से लाया जाता है और हमारे गुरूद्वारों के अंदर उनको नौकरी दी जाती हैं। 100 प्रतिशत मैनेजेरियल पोजीशन पंजाब के लोगों की है। स्पीकर सर, क्या यह हरियाणे के सिक्खों का अधिकार नहीं, क्या हरियाणे के सिक्ख पंजाब के सिक्खों से कम है, क्या हमारा गौरवमयी सिक्खों का इतिहास किसी प्रकार से पंजाब से कम हैं ? क्या हमारे सिक्खों का यह अधिकार नहीं कि उनके बच्चे धार्मिक प्रचार के अंदर, गुरूद्वारों की मैनेजमैन्ट के अंदर जिम्मेवारी की पोजीशन लें ? हमारे सिक्ख और पंजाबी भाई भी बहुत काबिल हैं उनको यह अधिकार मिलना चाहिए था परन्तु उनका यह अधिकार पूरी तरह से छीन लिया गया । जिस दिन पंजाब और हरियाणा का पुनर्गठन हुआ था उस समय भी यह बात आयी थी । हालांकि हरियाणा के ये लोकदल के हमारे भाई वखरी एस०जी०पी०सी० का विरोध करते हैं और बादल की पार्टी तो चीखें मारती ही है। स्पीकर सर, जिस दिन पंजाब और हरियाणा का अलग अलग गठन हुआ था उस दिन इंदिरा गांधी जी ने पंजाब पुनर्गठन अधिनियम बनाया था। इस पंजाब पुनर्गठन अधिनियम के अंदर यह स्पष्ट लिखा था कि वखरी एस०जी०पी०सी० का कानून आ सकता है और वह कानून बन भी सकता है । मैं आपकी इजाजत से इस अधिनियम की सैक्शन 72 (i) और 72 (iii) पढ़कर इस सदन के समक्ष रखना चाहूंगा। स्पीकर सर, इसमें लिखा है कि- General provisions as to statutory Corporations (1) Save as otherwise expressly provided by the foregoing provisions of this Part, where any body corporate constituted under a Central Act, State Act or Provincial Act for the existing State of Punjab or any part thereof serves the needs of the successor States or has, by virtue of the provisions of Part II become an inter-State body corporate, then, the body corporate shall, on and from the appointed day, continue to function and operate in those areas in respect of which it was functioning and operating immediately before that day, subject to such directions as may from time to time be issued by the Central Government, अगली लाइन महत्वपूर्ण है until other provision is made by law in respect of the said body corporate सर, 72(iii) में एस०जी०पी०सी० की चर्चा की गई है ।

72(iii) for the removal of doubt it is hereby declared that the provisions of this section shall apply also to the Panjab University constituted under the Punjab University Act, 1947, the Punjab Argricultural University constituted under the Punjab Agricultural University Act, 1961, and the Board constituted under the provisions of Part III of the Sikh Gurudwaras Act, 1925.

बादल साहब हों या ओम प्रकाश चौटाला हों, ये दोनों मिलकर एक सांठ-गांठ करके हमारे सिक्खों को बादल साहब का या बादल साहब के माध्यम से चौटाला जी का बंधुआ बना कर रखने का षडयंत्र करते हैं। सैक्शन 72 की धारा (i) और (iii) जिसकी संरचना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने की थी यानि हमारी मुखिया श्रीमती इन्दिरा गान्धी जी ने की थी उसके तहत हमें ये सीधे अख्तियार हैं। इसका प्रावधान किया गया है। वखरी एस०जी०पी०सी० हरियाणा प्रान्त के अंदर बन सकती है। जैसे सैक्शन 78 के तहत हमें अपने हिस्से का पानी लेने का अधिकार है, और सैक्शन 72 में पंजाब पुनर्गठन अधिनियम के तहत अपने अधिकार लेने का हमें पूरा अधिकार है। चटठा साहब के आंकड़े हमारे पंजाबी और सिक्ख भाईयों की एक दर्दनाक कहानी कहते हैं। सिक्ख शब्द से मतलब केवल सिक्ख से नहीं है। सिक्ख हमारे पंजाबी भी हैं, सिक्ख हमारा किसान भी है। पंजाबी वह सारे साथी भी हैं जो पाकिस्तान से आए हुए हैं। सिक्ख धर्म में केवल सिक्खों की ही नहीं दूसरे धर्मों के मानने वाले लोगों की भी आस्था है। भाई निर्मल सिंह जी जो प्रस्ताव यहां आज के दिन लाए हैं वह पंजाबी भाइयों की आशाओं के अनुरूप है। बहुत शुक्रिया ।